आगरा घराने में व्यवहृत अप्रचलित रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)

दयालबाग़, आगरा से संगीत में पीएच० डी०

की उपाधि हेतु प्रस्तुत प्रस्तावित

शोध–प्रबन्ध की रूपरेखा

2020

शोध–निर्देशक

प्रो0 रवि कुमार भटनागर
संगीत–विभाग (गायन)

शोधकर्त्ता

राहुल निवेरिय

संगीत–विभाग, कला–संकाय

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)

दयालबाग़, आगरा– 282005

भूमिका

आगरा घराना उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के विभिन्न घरानों में से अग्रणी घराने की भांति स्थापित है। इस घराने की गायकी ने जहाँ एक ओर विभिन्न गायन–शैलियों के माध्यम से कीर्तिमान स्थापित किये हैं वहीं इस घराने के मूर्धन्य कलाकारों द्वारा कई रागों एवं बन्दिशों को प्रचारित करने में अपना महती योगदान दिया है। गायन–शैलियों के प्रयुक्तिकरण में तो इस घराने में अधिकांशतः सभी शास्त्रीय संगीतात्मक विधाओं के द्वारा अपने रचनात्मक कौशल का लोहा मनवाया है। इस घराने की बंन्दिशों की सृजनात्मकता का तो कोई सानी ही नहीं है, क्योंकि इस घराने की राग एवं बन्दिशों का सहारा अन्य घरानों ने भी लिया है। आगरा घराने की गायकी का इतना चमत्कार था कि, न केवल बन्दिशें अपितु बन्दिशों के द्वारा राग भी सुप्रसिद्ध हो गये। नोम–तोम के आलाप, आवाज़ का खुलापन, लयकारी का काम, बोल–बांट की कलात्मकता जैसे कारक इस घराने की रागों का वर्चस्व स्थापित करने में जहाँ एक ओर सफल हुए हैं, वहीं दूसरी ओर कुछ राग इस घराने के प्रतिबिम्ब कहलाने लगे जैसे – नट–बिहाग, जोग, नायकी–कान्हड़ा, गारा, यमन–कल्याण, पूर्वी, मारू–बिहाग, जैजैवन्ती, गौड़–मल्हार इत्यादि।

उपर्युक्त उल्लेखित रागों के सुप्रसिद्ध एवं प्रचलित होने के पार्श्व में इस घराने के कलाकारों की कलात्मक सोच, रचना–धर्मिता एवं स्वर–विन्यास से परिपूर्ण योगदान का महत्वपूर्ण स्थान है। साथ ही साथ यह भी आश्चर्यजनक तथ्य है कि इस घराने के कलाकारों ने न केवल प्रचलित रागों के द्वारा ही संगीत–जगत में अपना आधिपत्य जमाया, अपितु अप्रचलित रागों को प्रचारित करने हेतु इस घराने का बहुत बड़ा योगदान है, किन्तु उनका कलात्मक प्रयास प्रकाश में नहीं आ सका। विभिन्न गायन–शैलियों के माध्यम से इस घराने के गायकों ने अनेक अप्रचलित रागों की रचनाओं का निर्माण किया तथा उन्हें प्रसिद्ध करने के लिए प्रयास भी किया, किन्तु फिर भी वे सब अधिक प्रकाश में न आ सके, अतः शोधकर्ता के मस्तिष्क में कतिपय प्रश्नों का उजागर होना स्वाभाविक ही है, जैसे –

- आगरा घराने में कितने अप्रचलित रागों को व्यवहार में लाया गया?
- कौन कौन सी गायन–शैलियों को किन अप्रचलित रागों हेतु चयनित किया गया?

- क्या चयनित अप्रचलित राग किसी विशेष अंग के हैं?
- अप्रचलित रागों के प्रयुक्तिकरण के आधार क्या हैं?
- क्या अप्रचलित राग अब भी व्यवहार में लाये जा रहे हैं अथवा सिखाये जा रहे हैं?
- अप्रचलित रागों की बन्दिशों के प्रमाण क्या हैं?
- आगरा घराने के वर्तमान कलाकार वर्ग की सोच क्या है?
- अप्रचलित रागों का स्रोत क्या है?
- क्या अप्रचलित रागों को कहीं मुद्रित अथवा ध्वन्यांकित किया गया है?

उपर्युक्त कतिपय महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर जानने की दृष्टि से, आगरा घराने का गहन अध्ययन करने हेतु, आगरा घराने की गायकी को विस्तार से जानने के लिए, इस घराने के अप्रचलित रागों को खोज़ने, जानने एवं अध्ययन करने की दृष्टि से शोधकर्ता द्वारा निम्न विषय का चयन किया गया है –

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षणः

आगरा घराने के अप्रचलित रागों पर शोध हेतु सर्वप्रथम सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया तथा सर्वेक्षण के उपरान्त निम्न साहित्य उद्घाटित हुआ।

शोध प्रबन्ध–

- **आगरा घराने : के संदर्भ में तराना गायन शैली**, सोनल कौशिक, दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, आगरा–2013
- **आगरा घराने की परम्परागत बंदिशों की संरचनात्मक विशेषताओं का विश्लेष्णात्मक अध्ययन**, शुचिस्मिता, कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, कुरुक्षेत्र– 2015

पुस्तकें –

- **मिलनोत्सुक दो तानपुरेः** लेखक पं0 श्रीकृष्ण बबनराव हल्दनकर, प्रकाशन : विद्यानिधि दिल्ली, 2001.
- **आगरा घराना परम्परा गायकी और बन्दिशेंः** लेखक – रमण लाल मेहता, प्रकाशन : भारतीय संगीत नृत्य – नाट्य, बड़ौदा, 1969.

- **Indian Classical Music & Gharana Tradition :** Writer – R. C. Mehta, Publisher - Motilal Banarasidas. 2011.
- **आगरा घराना – परम्परा एवं बन्दिशें:** लेखक – पं0 यशवन्त बुवा महाले, प्रकाशन : संस्कार –
- **Agra Gharana : Tradition, Musical Philosophy Repertoire:** Writer – Ram Lal Mehta, Publisher – Createspace Independent Pub. 23 Oct. 2017.
- **प्राण पिया – उत्साद विलायत हुसैन खान:** लेखक – तापसी घोष, प्रकाशन : Atlantic – 01 दिसम्बर 2007.
- **अप्रचलित राग व ताल :** लेखक – प्रो0 स्वतंत्र शर्मा, प्रकाशन : हिन्दी बुक सेन्टर, 2011.
- **प्रचलित राग :** लेखक – प्रसाद कुलकर्णी, प्रकाशन : संस्कार
- **उस्ताद फ़ैयाज़ खान –**लेखक – दीपाली नाग, प्रकाशन – आई. टी. सी. संगीत रिसर्च अकदमी, कलकत्ता, 1985

लघु शोध प्रबन्ध–

- **गायन के आगरा घराने का विश्लेषणात्मक अध्ययन,** बोस, वर्णाली–1993
- **राग संगीत में आगरा घराने का योगदान पंजाब यूनिवर्सिटी,** कुमार सुभाष– 2004.
- **आगरा घराने में गाये जाने वाले विशिष्ट रागों एवं बन्दिशों का अध्ययन,**बाला रेनू–2010
- **आगरा घराने की बोल–बांट ठुमरी– एक विवेचनात्मक अध्ययन,**शर्मा चंचल– 2013
- **आगरा घराने की सादरा गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन**, सत्संगी अर्शा–2015
- **आगरा घराने की ख्याल गायकी का अध्ययन – विशेषकर एक ताल निबद्ध ख्याल के संदर्भ में,**सत्संगी अर्शा– 2016
- **आगरा घराने में व्यवहृत ध्रुपद गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन,**अधारी दरश– 2018

समाचार पत्र/पत्रिकाएँ–

- **The Grandeur of Agra Gayaki : Lalit Rao,**Jyoti Nair, 13 July 2017 14:45 IST
- Published - The Hindu

- **The Agra Gharana of Hindustani :** N. Jayavanth Rao,29 Del 2016, Published - Sahapedia
- **The Agra Gharana :**Samarth Nagarakar, Published - The Learn quest Annual Magazine, March 2017
- **How the Agra Gharana Cast a spell on Lalith Rao :**Chitra Swaminathan, Published - The Hindues, 13 Dec. 2018 16:19 IST.
- **The Taste of 'Organic' FruitPandit Yash Paul and the Agra Gharana :**Manjari Sinha, Published - The Hindu**,** 21 Sep 2018 11:35 IST.
- **Music Without Spirituality is Meaning Less :** Ustad Waseem Ahmed Khan, Publisher - K. Pradeep, Published - The Hindu, 19 Sep 2019 15:54 IST
- **Recital a Reflection of Darpan :** Prof Harvindar Singh's, Publisher - Shailaja Khanna, Published - The Hindu, 8 June 2018 01:10 IST

उपर्युक्त साहित्य का सर्वेक्षण करने के बाद यह ज्ञात होता है कि आगरा घराने की ऐतिहासिकता पर तो उल्लेख प्राप्त होते हैं तथा आगरा घराने के कलाकारों पर भी सामग्री प्राप्त होती है साथ ही साथ आगरा घराने में प्रयुक्त गायन–शैलियों जैसे– तराना, सादरा, बोलबांट, ठुमरी, द्रुत व विलम्बित खयाल की बन्दिशों परभी सामग्री लिखित रूप में प्राप्त होती है जैसेआर.सी. मेहता जी की पुस्तक 'आगरा घराना' में आगरा घराने की ऐतिहासिकता दृष्टव्य होती है। 'दीपाली नाग' द्वारा लिखित पुस्तक 'उस्ताद फैयाज़ खान' में आगरा घराने के कलाकरों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर सामग्री प्राप्त होती है। आर.सी. मेहता जी की पुस्तक में आगरा घराने की गायन–शैलियों में निबद्ध बन्दिशें प्राप्त होती हैं किन्तु आगरा घराने के कलाकारों द्वारा गाये गये अप्रचलित रागों पर कोई सामग्री प्राप्त नहीं है।

अतः प्रस्तावित शोध से सम्बन्धित सामग्री का नितान्त अभाव है तथा जो साहित्य यत्र–तत्र आंशिक रूप से प्राप्त होता है उसका उल्लेख किया जा चुका है।

अस्तु, आगरा घराने की ऐतिहासिकता को जानने की दृष्टि से, आगरा घराने के प्रचलित रागों को गहनता से खोजने तथा सीखने की दृष्टि से, आगरा घराने की गायकी को अत्यन्त सूक्ष्मता से जानने एवं सीखने के लिए, इस घराने के कलाकारों द्वारा गाये गये अप्रचलित रागों को खोजने की दृष्टि से,

आगरा घराने में व्यवहृत अप्रचलित रागों की बन्दिशों को अन्वेषित करने हेतु, आगरा घराने की विभिन्न गायन–शैलियों में रचित अप्रचलित रागों को सीखने की दृष्टि से निम्न विषय का चयन किया है –

विषय कथन :

"आगरा घराने में व्यवहृत अप्रचलित रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

अध्ययन की आवश्यकता :

आगरा घराने में व्यवहृत राग प्रचलित एवं सुविख्यात हैं किन्तु शास्त्रीय संगीत के जगत में इस घराने के अप्रचलित रागों को बहुत कम संगीतज्ञ एवं विद्वान जानते हैं अतः इस घराने में प्रयुक्त किये गये अप्रचलित रागों को प्रकाश में लाने की आवश्यकता है। कोई भी राग किन्हीं कारणों से प्रचलित एवं अप्रचलित हो जाता है। अतः अप्रचलित रागों के पार्श्व में भी कतिपय ऐसे कारण रहे होंगे जो किसी राग को अप्रचलित कर देते हैं, उन कारणों को भी उजागर करने की आवश्यकता है। आगरा घराने की गायकी एक विशिष्ट गायकी है, उस विशिष्ट गायकी को भी अप्रचलित रागों के माध्यम से समझना, सीखना तथा प्रयोग करने की अत्यन्त आवश्यकता है।आगरा घराने के विभिन्न कलाकारों के पास अप्रचलित रागों की कई बन्दिशें विद्यमान हैं। अतः उन सभी बन्दिशों को प्रकाश में लाने की आवश्यकता है।

अध्ययन का महत्त्व :

आगरा घराने के अप्रचलित रागों को प्रचार में लाने हेतु प्रस्तावित शोध महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा। इस शोध का महत्त्व आगरा घराने के अप्रचलित रागों को जानने, सीखने, बन्दिशों को एकत्रित करने तथा शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित करने में भी है। शोध से प्राप्त हुई सामग्री भविष्य में आने वाले शोधार्थियों के लिए भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होगी।

उद्देश्य :

1. आगरा घराने की ऐतिहासिकता को जानना
2. अप्रचलित रागों के सैद्धान्तिक एवं क्रियात्मक स्वरूप को जानना एवं सीखना
3. आगरा घराने में व्यवहृत अप्रचलित रागों के विषय में कलाकारों द्वारा जानकारी प्राप्त करना
4. आगरा घराने में प्रयोग किये गये अप्रचलित रागों को इसी घराने के विभिन्न कलाकारों द्वारा बन्दिशें प्राप्त करना

5. अप्रचलित रागों की विभिन्न बन्दिशें एकत्रित करना

6. अन्य घरानों से अप्रचलित रागों में बन्दिशें प्राप्त करना

7. शोधार्थी द्वारा अप्रचलित रागों में बन्दिशों का स्वयं निर्माण करना

8. आगरा घराने की गायकी को सीखना

अध्ययन का परिसीमांकन :

कार्य एवं समय की सीमा को देखते हुए प्रस्तावित शोध को आगरा घराने के केवल 8 कलाकारों एवं 20 रागों तक ही सीमित किया जायेगां।

अध्ययन की कार्यविधि एवं उपकरण :

कार्यविधि–प्रस्तावित शोध हेतु वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक एवं सर्वेक्षणात्मक कार्यविधि का प्रयोग किया जायेगा।

उपकरण– प्रस्तावित शोध हेतु प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं अनुसूची का प्रयोग किया जाएगा। अन्य उपकरणों में टेप रिकॉर्डर, कम्प्यूटर, सी0डी0, वेब सामग्री, ध्वन्यांकित सामग्री, वीडियो कैमरा इत्यादि का प्रयोग किया जायेगा।

अध्यायों का विभाजन

प्रथम अध्याय :

(i) आगरा घराने का ऐतिहासिक परिचय

(ii) आगरा घराने की गायकी एवं कलाकार

द्वितीय अध्याय :

(i) राग – व्युत्पत्ति, अर्थ, इतिहास व विभिन्न मत

(ii) अप्रचलित राग – इतिहास व विभिन्न मत

तृतीय अध्याय :

(i) आगरा घराने के अप्रचलित राग – सैद्धान्तिक स्वरूप

(ii) आगरा घराने के अप्रचलित राग – क्रियात्मक स्वरूप

चतुर्थ अध्याय :

(i) आगरा घराने में व्यवहृत अप्रचलित रागों व बन्दिशों का विश्लेषण

पंचम अध्याय :

(i) शोधार्थी द्वारा रचित अप्रचलित रागों में विविध बंदिशें

(ii) विभिन्न स्रोतों द्वारा अप्रचलित रागों की बंदिशों का संकलन

निष्कर्ष :

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

संदर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें :

1. हल्दनकर, पं0 श्रीकृष्ण बबनराव (2001). मिलनोत्सुक दो तानपुरे,दिल्ली विद्यानिधि प्रकाशन।
2. मेहता, रमण लाल(1969)आगरा घराना परम्परा गायकी और बन्दिशें:बड़ौदा, भारतीय संगीत नृत्य–नाट्य महाविद्यालय, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय।

3- Mehta,R.C., (2011) Indian Classical Music & Gharana Tradition, Motilal Banarasidas Publisher.

4- महाले, पं0 यशवन्त बुवाआगरा घराना – परम्परा एवं बन्दिशें, संस्कार प्रकाशन।

5- Mehta, Ram Lal (2017), Agra Gharana : Tradition, Musical Philosophy Repertoire,Create space Independent, Publisher..

6- खान, उस्ताद विलायत हुसैन (2007), प्राण पिया–उत्साद विलायत हुसैन, तापसी घोष प्रकाशन।

7- शर्मा, प्रो0 स्वतंत्र (2011), अप्रचलित राग व ताल, हिन्दी बुक सेन्टर प्रकाशन।

8- कुलकर्णी, प्रसाद, प्रचलित राग, संस्कार प्रकाशन।.

9- नाग, दीपाली (1985), उस्ताद फ़ैयाज खान,कलकत्ता, आई टी सी संगीत रिसर्च अकदमी प्रकाशन।

10- चौधरी, एन0आर0 (2007), आगरा व जयपुर घराने की विशिष्ट बंदिशें, नई दिल्ली राज प्रकाशन।

11- हल्दनकर, एस0एस0 (2007), Ragas as Sung in Agra Gharana, मुम्बई रागश्री संगीत प्रतिष्ठान प्रकाशन।

12- शर्मा, एम0 (2006), Traditions Hindustani Music, ए0पी0एच0 प्रकाशन।

13- मेहता, आर0सी0 (1993), Composition in Indian Music, बड़ौदा, इंडियन म्यूजिकल सोसाइटी प्रकाशन।

14- Ratanjankar, Dr. S.N., Aesthetics Aspects of Indian Musical Haritage,

15- Ratanjankar, Dr. S.N., Sangeet Ratanjankar's Swadhyay & Ragadhyay,

शोध प्रबन्ध–

1. कौशिक, सोनल (2013), आगरा घराने के संदर्भ में तराना गायन शैली, आगरा दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट।
2. शर्मा, शुचिस्मिता (2015), आगरा घराने की परम्परागत बंदिशों की संरचनात्मक विशेषताओं का विश्लेष्णात्मक अध्ययन। कुरुक्षेत्र, कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी।
3. बोस, बर्नाली (1997), भारतीय संगीत में आगरा घराने के योगदान का ऐतिहासिक अध्ययन,आगरा, दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट।
4. केलकर, गोपाल राव, (2015), आगरा घराने का भारतीय संगीत में सृजनात्मक योगदान, बड़ौदा,महाराजा सयाजीरॉव यूनिवर्सिटी।

लघु शोध प्रबन्ध–

- रेनू, बाला (2010), आगरा घराने में गाये जाने वाले विशिष्ट रागों एवं बन्दिशों का अध्ययन।
- बोस, वर्णाली (1993), गायन के आगरा घराने का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
- शर्मा, चंचल (2013), आगरा घराने की बोल–बांट ठुमरी : एक विवेचनात्मक अध्ययन।
- सत्संगी, अर्शा (2015), आगरा घराने की सादरा गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
- सत्संगी, अर्शा (2016), आगरा घराने की ख्याल गायकी का अध्ययन – विशेषकर एक ताल निबद्ध ख्याल के संदर्भ में।
- अधारी, दरश (2018)आगरा घराने में व्यवहृत ध्रुपद गायन शैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
- कुमार, सुभाष (2004),राग संगीत में आगरा घराने का योगदान पंजाब यूनिवर्सिटी।

समाचार पत्र/पत्रिकाएँ–

1. Nair, Jyoti (2017),**The Grandeur of Agra Gayaki : Lalit Rao,** The Hindu Published.

2. Rao N. Jayavanth (2016),**The Agra Gharana of Hindustani,**Sahapedia Published.

3. Nagarakar, Samarth (2017), **The Agra Gharana,** The Learn quest Annual Magazine Published.

4. Swaminathan, Chitra (2018), **How the Agra Gharana Cast a spell on Lalith Rao,** The HinduesPublished.

5. Sinha**,** Manjari(2018), **The Taste of 'Organic' Fruit Pandit Yash Paul and the Agra Gharana,** The HinduPublished.

6. Khan,Ustad Waseem Ahmed (2019),**Music Without Spirituality is Meaning Less**, The HinduPublished.

7. Khanna,Shailaja(2018),**Recital a Reflection of Darpan,**The Hindu Published.

प्रश्नावली

रूप रेखा निर्मित करने से पूर्व विभिन्न कलाकारों से पूछे गये प्रश्न–

1. आगरा घराने का प्रारम्भ कब हुआ?
2. आगरा घराने का प्रादुर्भाव कहाँ से हुआ?
3. आगरा घराने के प्रवर्तक कौन हैं?
4. आगरा घराने की गायकी की विशेषताएं क्या हैं?
5. आगरा घराने के प्रचलित रागों के नाम क्या हैं?
6. आगरा घराने के अप्रचलित रागों के नाम क्या हैं?
7. आगरा घराने के आधुनिक कलाकार कौन–कौन से हैं?
8. आगरा घराने की प्रचलित रागों की बन्दिशें कौन–कौन सी हैं?
9. आगरा घराने की अप्रचलित रागों की बन्दिशें कौन–कौन सी हैं?
10. आगरा घराने की ध्रुपद/धमार की बन्दिशों की विशेषताएं क्या हैं?
11. आगरा घराने में अप्रचलित राग कौन–कौन से गायकों द्वारा गाये गये?
12. कौन से अंग में अप्रचलित राग अधिक गाये गये?
13. क्या मिश्र रागों में अप्रचलित राग गाये गये हैं?

14. ख्याल के अतिरिक्त अन्य गायन शैलियों में क्या अप्रचलित राग स्वरबद्ध किये गये हैं?
15. अप्रचलित राग किसी आगरा घराने के कलाकार के पास ध्वन्यांकित रूप में या लिखित रूप में प्राप्त किये जा सकते हैं?
16. किन्हीं पाँच अथवा दस अप्रचलित रागों के नाम प्राप्त हो सकते हैं?
17. आगरा घराने के अछोप राग जिन्हें वर्तमान में अप्रचलित कहा जाता है, क्या दोनों एक ही हैं? यदि कुछ अन्तर है तो स्पष्ट कीजिए।
18. रागों के अप्रचलित होने के क्या कारण रहे? क्या मिश्रित राग अप्रचलित रहे?
19. आनन्द/नन्द कल्याण जैसा राग मिश्र रागों की श्रेणी में आता है किन्तु आगरा घराने में बहुत गाया–बजाया गया है, क्या इस प्रकार के अन्य राग भी हैं?
20. क्या उस्ताद फैयाज़ खान साहब ने अप्रचलित राग गाये?